

"मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ आज के युग के संदर्भ में"

मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ आज के युग (2026) में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी वे अपने समय में थीं। यद्यपि समय बदल गया है और तकनीक का विकास हुआ है, लेकिन प्रेमचंद द्वारा उठाए गए सामाजिक, आर्थिक और मानवीय मुद्दे आज भी भारतीय समाज में रचे-बसे हैं।

1. आर्थिक शोषण और असमानता (होरी, गोदान 2026):

'गोदान' और 'पूस की रात' जैसे उपन्यासों/कहानियों में दिखाए गए किसानों के शोषण का मुद्दा आज भी जारी है। किसान आज भी कर्ज के जाल में फंसते हैं और आत्महत्या की खबरें हमें सुनाई देती हैं। शहरीकरण के बावजूद, गाँवों में गरीबी और किसानों की समस्याओं में कोई बड़ा सकारात्मक बदलाव नहीं आया है।

2. सामाजिक असमानता और जातिवाद (ठाकुर का कुआँ)

प्रेमचंद की कहानी 'ठाकुर का कुआँ' में दलित समाज की जो तस्वीर है, वह आज भी प्रासंगिक है। पानी जैसी मूलभूत आवश्यकता से वंचित करने और जाति के आधार पर भेदभाव के मामले आज भी कई जगहों से सामने आती हैं।

3. महिला सशक्तिकरण और चुनौतियाँ (निर्मला और धनिया)

प्रेमचंद ने 'निर्मला' और 'धनिया' जैसे पात्रों के माध्यम से वेमेल विवाह, दहेज प्रथा और महिला सुरक्षा के मुद्दे उठाए थे, जो आज भी भारत के लिए एक गंभीर चुनौती हैं। महिला सुरक्षा आज भी बहस का विषय है, और दहेज के कारण होने वाली हिंसा आज भी समाचारों में प्रमुखता से आती है।

4. मानवीय संवेदनाओं का हास (ईदगाह और बड़े भाई साहब)

'ईदगाह' का हामिद हमें आज के उपभोक्तावादी युग में भी त्याग और संवेदनशीलता का पाठ पढ़ाता है। 'बड़े भाई साहब' शिक्षा व्यवस्था में रटने की प्रवृत्ति और जीवन के व्यावहारिक ज्ञान की महत्ता को आज भी सही साबित करते हैं।

5. छुआछूत और सामाजिक सुधार:

प्रेमचंद ने अपने लेखन के माध्यम से छुआछूत और सामाजिक रूढ़ियों का विरोध किया। आज का भारतीय समाज इन बुराइयों से लड़ रहा है, लेकिन प्रेमचंद की कहानियाँ हमें इन रूढ़ियों के विरुद्ध लड़ना सिखाती हैं।

निष्कर्ष:

"प्रेमचंद की कहानियाँ केवल ग्रामीण जीवन का चित्रण नहीं हैं, बल्कि वे एक ऐसी दर्पण हैं जिसमें भारतीय समाज का चेहरा आज भी देखा जा सकता है। उनकी कहानियों की सादगी, ईमानदारी और सामाजिक यथार्थवाद उन्हें आज के युग में भी एक शक्तिशाली साहित्यकार के रूप में प्रासंगिक बनाए हुए है।"